अंधेर नगरी अनबूझ राजा। टका सेर भाजी टका सेर खाजा।।

नीच ऊँच सब एकहि ऐसे। जैसे भँडुए पंडित तैसे।।

कुल-मरजाद न मान बड़ाई। सबैं एक से लोग-लुगाई।।

जात-पाँत पूछै नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का होई।।

28/5/2022 (Evening)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 598 **A**

Unique Paper Code : 52051416-OC

Name of the Paper : Hindi 'B'

Name of the Course : **B.Com. (Prog.) CBCS**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. नाटक के विकासक्रम पर प्रकाश डालिए।

अथवा

हिंदी गद्य के उद्‌भव के कारणों की विवेचना कीजिए । (12)

2. 'उसने कहा था' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

कहानी के तत्वों के आधार पर गुंडा कहानी की समीश्रा कीजिए। (12)

3. 'सदाचार का ताबीज' का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

'मेले का ऊँट' में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए। (12)

4. 'अंधेर नगरी' आज भी प्रासंगिक है- स्पष्ट कीजिए।

अथवा

बिबिया का सार लिखिए। (12)

5. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए :

(क) प्रसादयुगीन नाटक

(ख) निबंध (7)

6. निम्नलिखित प्रसंगों की व्याख्या कीजिए :- (10×2=20)

(क) आधी रात जा चुकी थी, आकाश पर तारों के थाल सजे हुए थे और उन पर बैठे हुए देवगण स्वर्गीय पदार्थ सजा रहे थे, परन्तु

उसमें किसी को वह परमानंद प्राप्त न हो सकता था, जो बूढ़ी काकी को अपने सम्मुख थाल देखकर प्राप्त हुआ। रूपा ने कंठावरुद्ध स्वर में कहा- - -काकी उठो, भोजन कर लो। मुझसे आज बड़ी भूल हुई, उसका बुरा न मानना। परमात्मा से प्रार्थना कर दो कि वह मेरा अपराध क्षमा कर दें।

अथवा

"मैं मर सकता हूँ! पहले महारानी को डोंगी पर बिठाइए। नीचे दूसरी डोंगी पर अच्छे मल्लाह हैं। फिर बात कीजिए।-मनियरसिंह ने देखा, जनानी ड्योढ़ी का दरोगा राज की एक डोंगी पर चार मल्लाहों के साथ खिड़की से नाव सटाकर प्रतीक्षा में है। उन्होंने पन्ना से कहा-चलिए, मैं साथ चलता हूँ।"

(ख) मनुष्य के स्वभाव ही में यह बात है कि जब वह किसी बात पर प्रवृत्त होता है तो क्रमशः उस की उन्नति करता जाता है और उस विषय को जब तक वह एक अंत तक नहीं पहुँचा लेता संतुष्ट नहीं होता। सूर्य के मानने की ओर जब मनुष्यों की प्रवृत्ति हुई तो इस विषय को भी वे लोग ऐसी ही सूक्ष्म दृष्टि से देखते गये।

अथवा